नरेश मेहता

[कृतित्व और विचारधारा]

B.A. III

हिन्दी साहित्य

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. जगदीश शरण

सहायक प्रोफ़ेसर हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय, भोजपुर

(मुरादाबाद)

* स्वनिर्मित *

Scanned with CamScanner

नरेश मेहता : संक्षिप्त परिचय : जन्म सन् 1922 को 15 फरवरी को मालवा के शाजापुर नामक कस्बे में। पिता का नाम - बिहारी लाल शुक्ल मेहता। उच्च शिक्षा काशी विश्वविद्यालय में प्राप्त की। देहरादून में सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। सन् 1948 से सन् 1953 तक रेडियो की नौकरी की। सन् 1953 में ही नौकरी से इस्तीफा दिया। साहित्यकार, भारतीय श्रमिक, कृति, आगामी कल नामक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। अज्ञेय द्वारा सम्पादित दूसरा 'तारसप्तक' में नरेश मेहता की सात कविताएँ संकलित हैं। प्रमुख कृतियाँ — संशय की एक रात, प्रवाद पर्व, शबरी, महाप्रस्थान (काव्य-ग्रन्थ), यह पथ बन्धु था, धूमकेतु एक श्रुति, नदी यशस्वी है, उत्तर कथा, डूबते मस्तूल (उपन्यास), सुबह के घण्टे, खण्डित यात्रा (नाटक), जलसा घर (कहानी) आदि।

संशय की एक रात : यह एक प्रबन्ध काव्य कृति है। इसमें राम के मन के संशय को चित्रित किया गया है। वानरों के द्वारा समुद्र में पुल बँध जाने पर राम का मन सहसा संशय से भर जाता है। वह सोचते हैं कि एक सीता के लिए इतना नरसंहार करना उचित नहीं है। वह अपने सहयोगियों से विचार-विमर्श करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि युद्ध अवश्य किया जाय किन्तु वह युद्ध सीता के लिए न होकर प्रजा के लिए हो।

महाप्रस्थान : यह भी खण्डकाव्य है जिसमें पौराणिक कथा को नवीन वैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। काव्य की कथा महाभारत की कथा पर आधारित है। इसमें नरेश मेहता ने युधिष्ठिर को मानव-मुक्ति का प्रतीक-पुरुष बनाकर राज्य और व्यक्ति के सन्तुलित सम्बन्धों को ... की गई है।

नरेश मेहता : संक्षिप्त परिचय : जन्म सन् 1922 को 15 फरवरी को मालवा के शाजापुर नामक कस्बे में। पिता का नाम – बिहारी लाल शुक्ल मेहता। उच्च शिक्षा काशी विश्वविद्यालय में प्राप्त की। देहरादून में सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट का प्रशिक्षण भी प्राप्त किया। सन् 1948 से सन् 1953 तक रेडियो की नौकरी की। सन् 1953 में ही नौकरी से इस्तीफा दिया। साहित्यकार, भारतीय श्रमिक, कृति, आगामी कल नामक पत्र-पत्रिकाओं का सम्पादन किया। अज्ञेय द्वारा सम्पादित दूसरा 'तारसप्तक' में नरेश मेहता की दस कविताएँ संकलित हैं। प्रमुख कृतियाँ – संशय की एक रात, प्रवाद पर्व, शबरी, महाप्रस्थान (काव्य-ग्रन्थ), यह पथ बन्धु था, धूमकेतु एक श्रुति, नदी यशस्वी है, उत्तर कथा, डूबते मस्तूल (उपन्यास), सुबह के घण्टे, खण्डित यात्रा (नाटक), जलता घर (कहानी) आदि।

संशय की एक रात : यह एक प्रबन्ध काव्य कृति है। इसमें राम के मन के संशय को चित्रित किया गया है। वानरों के द्वारा समुद्र में पुल बँध जाने पर राम का मन सहसा संशय से भर जाता है। वह सोचते हैं कि एक सीता के लिए इतना नरसंहार करना उचित नहीं है। वह अपने सहयोगियों से विचार-विमर्श करते हैं और निष्कर्ष निकालते हैं कि युद्ध अवश्य किया जाय किन्तु वह युद्ध सीता के लिए न होकर प्रजा के लिए हो।

महाप्रस्थान : यह भी खण्डकाव्य है जिसमें पौराणिक कथा को नवीन वैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत किया गया है। काव्य की कथा महाभारत की कथा पर आधारित है। इसमें नरेश मेहता ने युधिष्ठिर को मानव-अस्मिता का प्रतीक-पुरुष ~~बनाकर~~ बनाकर राज्य और व्यक्ति के सन्तुलित सम्बन्धों को उद्घाटित करने की चेष्टा की गई है।

Scanned with CamScanner

प्रवाद-पर्व : यह भी एक आख्यानक काव्य है। प्रवाद-पर्व के पात्रों राम और सीता के माध्यम से नरेश मेहता ने ~~[illegible]~~ में व्याप्त राजनीतिक, प्रशासन, राज्य और सामान्य जन की समुचित एवं तार्किक वैचारिकता प्रस्तुत की है। इसके साथ ही जीवन की समस्याओं, सामयिक तनावों, दबावों, विसंगतियों और कुरूपताओं को भी प्रस्तुत किया गया है।

मिथकीयता : 'मिथ' से तात्पर्य प्रागैतिहासिक एवं आदिम कल्पनाओं से है जो ईश्वरीय शक्ति, आध्यात्मिक कथानक इत्यादि से सम्बद्ध है। 'मिथ' शब्द कथानक, घटना एवं वर्णन के अर्थ में प्रयुक्त होता है। 'मिथ' की चर्चा सर्वप्रथम अरस्तू के काव्यशास्त्र में हुई है। उस समय यह तर्कपूर्ण दार्शनिक पद्धति का विरोधी माना जाता था, फिर भी 'मिथक' साहित्य में अपना स्वरूप पाता गया और वर्तमान में यह सशक्त भाव-अभिव्यक्ति का आधार बन गया है। यद्यपि मिथक पुराणों से सम्बद्ध हैं परन्तु यथार्थ से इनका गहरा सम्बन्ध है।

'मिथ' शब्द की उत्पत्ति यूनानी शब्द 'माइथोस' से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ है — अन्तरंग आख्यान। यही शब्द मिथक बनकर हिंदी में प्रयुक्त हुआ है। डॉ० नगेन्द्र ने इसे 'दन्तकथा' कहा है। डॉ० रामअवध द्विवेदी इसे 'पुनरावृत्ति' मानते हैं। डॉ० लक्ष्मीनारायण ने मिथक को 'पुराख्यान' और 'धर्मगाथा' कहा है।

मिथक के विषय में चर्चा करते हुए डॉ० मिश्कात आबिदी ने लिखा है कि मिथक के साथ हमारी परम्परा और संस्कृति जुड़ी है। वास्तव में यह हमारी वास्तविकता का प्रमाण, चिह्न है। अतीत एवं पुराणों की कथा इतिहास आदि के हवाले से हम अपने अस्तित्व को स्थापित कर नया समझता, नया जीवन-शैली को अर्थ देने में लगे हैं। मिथक एक प्रकार का रहस्यमय शक्तिशाली

Scanned with CamScanner

स्रोत है। जब भी, जहाँ भी हमारी रियालिटी की पहचान संदिग्ध होती है, तब हम वहीं मिथक का सहारा लेते हैं क्योंकि मिथक रियालिटी की पहचान का सबसे पुराना साधन है।... मिथक का सम्बन्ध अधिक लोकमानस से है जो समाज में घटित हो रही घटनाओं, व्यापारों आदि से जुड़ा है। सभ्यता के विकास के साथ यह हमारे जीवन का अंग बन गया है। मिथक के द्वारा हम बार-बार अपने अतीत से जुड़ते हैं, वर्तमान को समझते हैं और भविष्य को नई दिशा देते हैं।

~~हिन्दी साहित्य में~~ पौराणिक मिथकों ~~से~~ को आधार ग्रहण करके उन्हें वर्तमान में प्रासंगिक बनाकर अनेक स्वनाएँ ~~काव्यग्रन्थ~~ हिन्दी ~~साहित्य~~ में रची गयी हैं। अन्धायुग, आत्मजयी, असाध्य वीणा, ~~संशय की एक रात~~, कनुप्रिया, प्रियप्रवास, साकेत, उर्वशी, लोकायतन, सत्यकाम, शम्बूक, कामायनी, राम की शक्तिपूजा आदि स्वनाएं मिथकों को आधार बनाकर रची गयी हैं।

नरेश मेहता की कालजयी स्वनाएं 'संशय की एक रात', 'महाप्रस्थान', 'शबरी' और 'प्रवाद-पर्व' पौराणिक मिथकों के आधार पर रचित हैं। ये सभी स्वनाएं प्राचीन शैली की हैं किन्तु आधुनिकता का पुट अपनाए हुए हैं। 'संशय की एक रात' आधुनिक राम की समाधि और व्यष्टि स्थिति को स्पष्ट करती है। इस कृति में नरेश मेहता ने राम को एक ~~प्रज्ञा प्रतीक~~, 'प्रज्ञा प्रतीक' के रूप में आधुनिक मानव का प्रतिनिधि बनाकर युगीन संशय, वैषम्य और विसंगतियों के माध्यम से युगानुरूप नयी धारणाएँ और नए मूल्य खोजने की चेष्टा की है।

'महाप्रस्थान' में नरेश मेहता पौराणिक आख्यान के बीच से अपनी मुक्त काव्य दृष्टि से भारतीय जनों की मानसिकता की गहरी जड़ों को समझते हुए युधिष्ठिर को मानव-मुक्ति का

Scanned with CamScanner

प्रतीक-पुरुष बनाकर राज्य और व्यक्ति के अन्तुलित सम्बन्धों का उद्घाटन करते हैं। 'प्रवाद-पर्व' में मिथक के रूप में राम को प्रस्तुत करके व्यक्ति और शासक की सार्थक अनिवार्य भूमिका का निर्धारण किया गया है। 'शबरी' नामक काव्य में नरेश मेहता ने मानवीय करुणा को केन्द्र में रखकर सम्पूर्ण वर्ण-व्यवस्था के ऊपर शबरी की आध्यात्मिकता को वैचारिक ऊर्ध्वता के रूप में प्रस्तुत किया है।

<u>युद्ध और शान्ति</u> : युद्ध मानव-समाज की एक अनिवार्य बुराई है। युद्ध में असंख्य लोगों की जान-माल की भारी क्षति होती है। युद्ध से सामाजिक संगठन अस्त-व्यस्त हो जाता है।

नरेश मेहता ने अपनी रचनाओं में युद्धों का घोर विरोध किया है। युद्ध की समस्या को इस युग के मनुष्य ने भोगा है। अपनी दो महत्त्वपूर्ण काव्य-ग्रन्थों – 'संशय की एक रात' और 'महाप्रस्थान' में नरेश मेहता ने युद्ध की समस्या को उठाया है। 'संशय की एक रात' के नायक राम का आन्तरिक संशय बाहरी संघर्ष अथवा प्रचण्ड युद्ध के कारण है। राम युद्ध को जन-संहार का आधार नहीं बनाना चाहते, इसलिए युद्ध अथवा शान्ति में वह किसे अपनाएँ इसका समाधान राम स्वयं नहीं कर पाते। वह युद्ध टालने का भरसक प्रयास करते हैं; अतः वह लक्ष्मण से कहते हैं –

जबकि हम
बान्धियों से
युद्ध से
निष्कृति पाना चाहते हैं
इस वैराट्य के सन्दर्भ में
आयोजन में
लक्ष्मण !

– संशय की एक रात, पृष्ठ 61

राम युद्ध को निरर्थक मानते हैं। प्रत्येक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए युद्ध ही क्यों जरूरी है? राम कहते हैं—

यदि बिना युद्धों के नहीं है पथ
लक्ष्मण
तब एक गहरा प्रश्न
लेकर प्रत्येक प्रगति के लिए।
ऐसा युद्ध
ऐसी विजय
ऐसी प्राप्ति—
सब मिथ्यात्व है।
नर संहार के व्यामोह के प्रति
वितृष्णा से भर उठा हूँ।

—संशय की एक रात, पृ० 10

'महाप्रस्थान' में ~~श्री~~ युधिष्ठिर युद्ध की ~~स्थिति~~ विभीषिका को बताते हुए कहते हैं—

प्रत्येक युद्ध—
जिसमें से एक राज्य जन्म लेता है,
कितनी स्त्रियों को विधवा
और बच्चों को अनाथ कर जाता है
और वे जीवन-संघर्ष में
दिशाहीन खो जाने के लिए
बाध्य हो जाते हैं।

—महाप्रस्थान, पृ० 107

नरेश मेहता का मानना है कि इतिहास की रचना बन्दूकों या तलवारों से नहीं होती है, वह तो मानवीय उदात्तता की कलम से लिखा जाता है। कवि का मानना है कि —

इतिहास
खड्ग से नहीं
मानवीय उदात्तता से लिखा जाना चाहिए।

— प्रवाद-पर्व, पृष्ठ 71

खण्डकाव्य : नरेश मेहता द्वारा रचित चार खण्डकाव्य हैं — संशय की एक रात, महाप्रस्थान, प्रवाद-पर्व और शबरी। चारों खण्डकाव्यों की रचना पौराणिक मिथकों के आधार पर हुई है। यहाँ यह विचारणीय तथ्य है कि इन चारों पौराणिक आख्यानों में नरेश मेहता ने नितान्त आधुनिक समस्याओं का समावेश कर काल की दूरी को समाप्त कर दिया है। आधुनिक सन्दर्भों के समाधान से नरेश मेहता ने कथावस्तुओं को एक नयी अर्थवत्ता दी है। सभी पात्र आधुनिक मानव के रूप में चित्रित हुए हैं। 'शबरी' खण्डकाव्य को छोड़कर शेष तीनों में युद्ध की समस्या पर विचार किया गया है।

आधुनिकता : यद्यपि नरेश मेहता के सभी काव्यग्रन्थ पौराणिक मिथकों के आधार पर रचित हैं, फिर भी उन्होंने सर्वत्र अपनी आधुनिक दृष्टि को अपनाया है। उनके सभी आख्यानक काव्य पौराणिक प्रसंगों के माध्यम से समसामयिक सवालों को उभारने में सक्षम हैं। डॉ० राजेश कुमारी के अनुसार 'संशय की एक रात' में कवि ने व्यष्टि मनस् को समष्टि मानस से जोड़कर प्रजातान्त्रिक मूल्यवत्ता को उजागर किया है। असमंजस, तनाव,

Scanned with CamScanner

अनास्था, निराशा आदि के बीच राम का आन्तरिक द्वन्द्व आधुनिक मानव के विघटित व्यक्तित्व और मूल्यों की टकराहट का प्रतीक बन गया है। पौराणिक प्रसंगों के माध्यम से कवि ने समकालीन जिन्दगी की विवशता, संशय ग्रस्तता, बेचैनी और अमानवीय भयावहता को सटीक अभिव्यक्ति प्रदान की है। उनमें दिखाऊ आक्रोश नहीं है। कवि ने प्राचीन सामाजिक मूल्यों को आज के आधुनिक समाज के रूप में चित्रित किया है। प्रत्येक युग के अपने मूल्य होते हैं। यद्यपि मूल्यों की एक परम्परा होती है तो भी प्रत्येक युग में उसकी सारी परम्परा नहीं ~~स्वीकारी~~ जाती। हर युग अपनी आवश्यकता और परिस्थिति के अनुरूप मूल्यों को स्वीकारता है अथवा उनका निर्माण करता है। कविवर नरेश मेहता चूँकि आधुनिक युग के द्विवेदी सम्पन्न साहित्यकार हैं अतः उन्होंने प्राचीन जिन मूल्यों को आज के लिए उपयोगी तथा मानवता के हित में सही जाना उनका अपनी कविता में भरपूर समर्थन किया तथा जिन्हें उन्होंने वर्तमान के सन्दर्भ में अधिक उपयोगी नहीं जाना उन्हें छोड़ भी दिया। उन्होंने नई आस्थाओं और मूल्यों का समर्थन भी किया।... नरेश मेहता ने भारतीय संस्कृति के सभी उन श्रेष्ठ मूल्यों को ~~अनुकरणीय~~ आचरणीय माना है जिनसे मनुष्य समाज और राष्ट्र की सत्ता और प्रतिष्ठा बनती है। उन्होंने झूठ, फरेब, छल, कपट, ठगी, चोरी, हत्या, युद्ध, संघर्ष तथा लूट को कहीं प्रत्यक्षतः कहीं प्रकारान्तर से तिरस्कृत किया है। ~~नरेश मेहता का काव्य इन्हीं सब~~ वास्तव में ये सब मूल्य तिरस्करणीय भी हैं। उन्होंने सत्य, सदाशयता, सदाचार, दया, करुणा, प्रेम, सौहार्द, आस्था, उपकार आदि मूल्यों को पुनः कीर्तित किया है। समाज असल में सद्मूल्यों की नींव तथा श्रेष्ठ आचरणीय मूल्यों की भित्ति पर ही टिका होता है। नरेश मेहता का काव्य इन्हीं सब उत्तम मानवीय मूल्यों की अभिव्यक्ति का काव्य है जो नई मूल्य दृष्टि को स्वीकारता है और प्राचीन अनुपयोगी मूल्यों को महत्व नहीं देता।

केन्द्रीय विचारधारा : नरेश मेहता ने चार प्रबन्धकाव्यों की रचना की है— संशय की एक रात, महाप्रस्थान, प्रवाद-पर्व और शबरी। इनमें 'शबरी' को छोड़कर तीनों प्रबन्धकाव्यों में युद्ध की समस्या को मुख्य रूप से उठाया गया है। 'शबरी' में शबरी की आध्यात्मिकता को भक्ति के सर्वोच्च शिखर पर स्थापित किया गया है। नरेश मेहता के काव्य में सर्वत्र मंगलमयी मानवीय दृष्टि के दर्शन होते हैं। इस सन्दर्भ में स्वयं नरेश मेहता ने लिखा है— "बादल का अवतरण, बादल के रूप में नहीं होता, उसे जल होना पड़ता है। इसी प्रकार जल जब ऊर्ध्वता प्राप्त करता है तब वह अनिवार्यतः वाष्प रूप धारण कर लेता है, मेघ और जल में भेद हमारी बुद्धि का है। ऊर्ध्वोन्मुखता और अवतरणता दो भिन्न प्रक्रियाएँ हैं। प्रत्येक प्रक्रिया का एक तर्क होता है और किसी तर्क की अस्वीकृति कोई तत्व नहीं कर सकता है। वैष्णवी ऊर्ध्वोन्मुखता ही शिवत्व है। शिवत्व की अवतरणता ही वैष्णवता है। दर्शन और काव्यात्मकता का यह अनाविल चक्र ही धर्मचक्र है। धर्मचक्र जब ऊर्ध्वोन्मुखी होता है तब वह दर्शन होता है और जब वह अवतरण करता है तब काव्य होता है।"

— दूसरा सप्तक, पृष्ठ 109

नरेश मेहता के काव्य में सांस्कृतिक मूल्यों की परीक्षा करते हुए डॉ० राजेश कुमार ने लिखा है कि नरेश मेहता भारतीय अस्मिता और सांस्कृतिक सम्पन्नता के कवि हैं। हमारे दर्शन, धर्म, संस्कृति आदि ने आत्मबोध और चेतना की ऊर्ध्वता के शिखरों का सदैव स्पर्श किया है। उनके काव्य की जमीन समसामयिक स्थितियों को गहरा स्पर्श देती हुई शाश्वत जीवन-मूल्यों को तलाशने में पूरा शिखर की ऊंचाइयों का प्रत्यय बन गई है। उनमें युग सन्दर्भों के अनुकूल जीवन

Scanned with CamScanner

सत्य की पकड़, ऊर्ध्वगामी चेतना और अमानवीय हालातों से टकराने की ताकत है। प्राचीन इतिहास उनकी संस्कृति-केन्द्रित का एक महत्वपूर्ण विषय है। क्योंकि उनका काव्य भारतीय सांस्कृतिक सम्पन्नता का काव्य है और मानवीय विकास के हर पहलू को साथ लेकर चला है। नरेश मेहता की सांस्कृतिक चेतना की सबसे बड़ी केन्द्रीय धारा उनकी उदात्तता है। भारतीय संस्कृति और भारतीय चिन्तन का सबसे केन्द्रीय पक्ष भी उसकी उदात्तता ही है। संकीर्णता, प्रतिशोध, हिंसा जैसी भावनाओं से क्रमशः ऊपर उठते चले जाना भारतीय संस्कृति ~~के~~ ~~क्रमशः संस्कृत~~ की पहचान है। उदात्तता ही उसे उस महाकरुणा और विराट सम्वेदना की अनुभूति से सिंचित करती है जहाँ सारा विश्व अपनी मांगलिक छवियों से उसे सम्मोहित करता रहता है।

डॉ० मीनाक्षी दुबे ने लिखा है कि नरेश मेहता की मान्यताएँ मनुष्य के लिए हैं। युगीन उत्पीड़न, दैन्य एवं घोर व्यंग्यपरकता से पूर्ण कविताएँ समाज के रूप को प्रस्तुत करने में समर्थ हुई हैं। उनका काव्यसंग्रह 'महाप्रस्थान' एक प्रबंध काव्यकृति है जिसमें महाभारत की कथा एवं पात्रों को समसामयिकता से जोड़कर नयी लोक दृष्टि नये आयामों के साथ प्रस्तुत किया गया है जिसमें उनका अन्तर्मन रमा हुआ है। ~~उन्होंने~~ उन्होंने व्यंग्यात्मक शैली के द्वारा समाज की स्थिति, भ्रष्टाचार, अत्याचार, पूँजीवाद, भाई-भतीजावाद इत्यादि को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। उनकी निर्वैतिक अनुभूतियाँ सामान्यजन को आकर्षित करती हैं। नरेश मेहता की कविता वास्तविक समाज के रूप प्रस्तुत करने में समर्थ हुई है। वे मनुष्य को प्राचीन परम्पराओं एवं जीवन को आधुनिक सन्दर्भ से जोड़ते हैं तथा रूढ़िवादी परम्पराओं को तोड़ने का आह्वान करते हैं।

भाषागत अध्ययन : नरेश मेहता नये प्रयोगों के कवि हैं। दूसरा ~~सप्तक~~ 'तारसप्तक' में संकलित उनकी रचनाओं को देखना पता-चलता है कि नरेश मेहता के काव्य का एक प्रमुख भाग प्रकृति एवं सौंदर्य और रोमांटिक संवेदनाओं का काव्य रहा है। ये प्रकृति चित्र समृद्ध कल्पना और मानवीयकरण के साथ-साथ कहीं-कहीं कवि की कमनीयता का भी सहज परिचय देते हैं। अपने काव्य का आरम्भ नरेश मेहता ने सौन्दर्यवादी के रूप में किया है। भाषा सम्बन्धी नवीन प्रयोग उनकी कविताओं में मिलते हैं। डॉ० माता गौतम ने लिखा हैं कि नरेश मेहता अतीत को वर्तमान के आधार पर नये मूल्यों में रखने के इच्छुक हैं। पौराणिक प्रतीकों का नये सन्दर्भों में प्रयोग इनकी कविता का मूल है। हिन्दी में बंगला के प्रयोग की बहुतायात है। शिल्पगत ऊँचाइयों को छूनेवाली इनकी कविता इनकी काव्य सक्षमता का परिचय देती है। आकर्षक बिम्ब विधान, सार्थक प्रतीक योजना, स्वाभाविक व सरल भाषा का प्रयोग इनके काव्य के सौन्दर्य को बढ़ाता है। वे लिखते हैं, 'पिछली अपनी छायावादी एवं रहस्यवादी कविताओं को मैं कविता नहीं मानता क्योंकि किसी भी प्रकार के प्रभाव से लिखी गयी कविता को द्वितीय श्रेणी का काव्य कहना होगा। और यह द्वितीय वाली बात मुझे नहीं पसन्द है। साहित्य के नये प्रयोगों की आवश्यकता दिन-पर-दिन बढ़ती जा रही है। विगत अनुकरणीय नहीं हो सकता, हाँ, शोभालंकार बनकर रह सकता है। नया तो मेरा युग है। मेरी प्रकृति है तथा सबसे नया मैं हूँ।'

नरेश मेहता ने अपने काव्य में सरल, सहज और साधारण-जन की भाषा का प्रयोग किया है। आलंकारिक भाषा का प्रयोग कम है। साथ ही, इन्होंने उर्दू शब्दों को प्रचुरता से अपनाया है। इनकी भाषा ने कतिपय

~~नरेश मेहता के~~ उदाहरण यहाँ दिए जा रहे हैं —

उर्दू-मिश्रित भाषा का उदाहरण :

यह कौन
इतनी रात में
किले के इन लावारिस सन्नाटों में
उजड़े बयार की
इन बेवा, बे-आबरू तामीरों के नीचे
दहशतज़दा आबनूसी अँधेरों में
तवारीख़ का टूटा बुत बना
यह कौन
अकेला बैठा है ?
क्या आलीजाह है ?

— संशय की एक रात, पृ० 24

सुख-दुःख की परिभाषा कवि ने अत्यन्त सरल और सहज भाषा में किस प्रकार प्रस्तुत की है, यह निम्नलिखित उदाहरण में देखिए :

सीता !
सुख का एक ही प्रकार होता है
परन्तु दुःख
कैसा बहुरूपी है
कहीं भी चले जाओ
किसी का भी द्वार खटखटाओ
केवल दुःख की ही प्रतिध्वनि आयेगी
~~सीता !~~
~~एकवचन दुःख ही प्रभु~~ है

— प्रवाद-पर्व, पृ० 68

o—o